राजस्थान में पर्यटन विकास का मूल्यांकन : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. निर्मला शर्मा

सार

मनुष्य सदैव से ही जिज्ञासु प्राणी रहा है। अपरिचित स्थलों को देखने जानने एवं समझने की जिज्ञासा मनुष्य की स्वभावगत प्रवृति रही है। इसी प्रवृति का परिणाम है 'पर्यटन' । आनन्द की खोज, मनोरंजन, तीर्थाटन, व्यापार व विनिमय, नवीन स्थलों को देखने की मानव सुलभ इच्छा, अलग-अलग स्थलों पर फैली मानव सभ्यता-सरं कृति को देखने की जिज्ञासा आदि अनेक कारणों से पर्यटन का विस्तार हुआ और यात्राओं ने व्यवस्थित रूप लेना आरम्भ किया।

मुख्य शब्द : पर्यटन , विदेशी, रोजगार , विकास, भौगोलिक, संस्कृति

पर्यटन परिचय

पर्यटन आधुनिक युग की उपज है। पाषाण काल से ही आदि मानव भोजन, आवास, सुरक्षा तथा अन्य जरूरतों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता था। सभ्यता के जन्म के साथ मानव की इस रूचि का भी विस्तार हुआ। नवीन स्थलों की खोज, नई खोजो के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा, तीर्थ-स्थलों का भ्रमण, व्यापार वाणिज्य विकास, दूसरे देशो पर अधिकार की लालसा, धार्मिक उत्साहू आदि कारणों से पर्यटन का विस्तार हुआ।

जैसे जैसे पर्यटन की सोच का विकास हुआ है, पर्यटन से जुड़ी अन्य क्रियाओं यथा आवास, भोजन, परिवहन आदि व्यवसायों का भी विकास त्वरित गति से होने लगा है। आमतौर पर पर्यटन एव यात्रा को एक ही मान लिया जाता है। जबकि इन दोनों में मूलभूत अन्तर है। यात्रा का उद्देश्य व्यवसाय या अन्य कुछ भी हो सकता है परन्तु पर्यटन का अर्थ है मनोरजन, ज्ञानवर्धन, नया देखने की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए भ्रमण पर्यटन व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करने के साथ ही अपने परिवेश से अलग लोगों की सर कृति, परम्पराओ, मान्यताओ, खान-पान आदि के बारे में बहुत कुछ नयी जानकारियाँ प्रदान करता है।

पर्यटन को समझे तो लगातार एक वर्ष या उससे कम समय तक सैर-सपाटा, व्यापार तथा अन्य कार्यों के लिए अपने रहने के सामान्य स्थान से बाहर घूमने तथा ठहरने वाले व्यक्तियों से जुडी गतिविधियों को पर्यटन कहा जाता है। पर्यटन देश-विदेश की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जानकारी प्रदान करने की ऐसी क्रिया है जिसमें भिन्न-भिन्न लोगों से मेल-मिलाप ही नहीं होता बल्कि व्यक्ति प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष एस ज्ञान भी अनायास ही प्राप्त करता है जो अन्य किसी स्रोत से नहीं मिल सकता है।

वर्तमान में पर्यटन के नित नये रूप उभर कर सामने आ रहे है जिसे हम पारम्परिक नहीं कह सकते हैं। पर्यटक अब प्राकृतिक सौन्दर्य और नयी जगह पर घूमने फिरने तक ही सीमित नहीं रहा है। पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटक अब नयी अनुभूतियाँ करना चाहता है। एस में हम कह सकते हैं कि जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं रहा जिसे पर्यटन से जोड़ नहीं दिया गया है। कहा जा सकता है कि पर्यटन वह असीमित क्षेत्र हो गया है, जिसे किसी भी सीमा में बांधा नहीं जा सकता है। पर्यटन यह उभरती हुई प्रवृति हैजिसे नवीनता एवं आधुनिकता से जोड़ते हुए विभिन्न तत्वों का सुनियोजित प्रबन्ध किया जाने लगा है। एस में यह स्वाभाविक ही है कि पर्यटन अब पहले से ज्यादा व्यवस्थित हो गया और विभिन्न रूपों में पर्यटकों को लुभाने वाला हो गया है।

पर्यटन के लिए अंग्रेजी में TOURISM शब्द का प्रयोग किया गया है। TOUR शब्द की उत्पत्ति TORNOS (टारनोस) लेटिन भाषा के शब्द से हुई है। टारनास शब्द एक एस औजार (मशीन) के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसे घूमते पहिये पर लगाकर व्यक्ति भ्रमण करता रहता है।

पर्यटन के लिए संस्कृत में तीन पर्याय

- परायटन अर्थात् सोद्देश्य (ज्ञान व आनन्द हेतु) भ्रमण करना ।
- देशाटन अर्थात् सामाजिक एवं आर्थिक लाभ के यात्रा करना।
- तीर्थाटन अर्थात् धार्मिक कारण एवं आस्था भाव से की गई यात्रा ।

पर्यटन में वे सभी व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्रियायें सम्मिलित है। जो यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। किसी भी यात्रा को पर्यटन तब कहा जाएगा जब वह निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति करता हो-

- जब यात्रा ऐच्छिक हो।
- जब यात्रा अस्थायी हो हालांकि इसकी अवधि बड़ी हो सकती है।
- जब यात्रा का उद्देश्य किसी प्रकार का पारिश्रमिक प्राप्त करना नहीं हो
- जब यात्रा से कोई ज्ञान या लाभ (चाहे धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा मनोरंजक) प्राप्त हो।
  जब यात्रा उक्त उद्देश्यों को पूरा करती है तभी उसे पर्यटन की संज्ञा दी जा सकती है।

साहित्यिक पुनरावलोकन

पर्यटन विषय पर पूर्व में अनेक ग्रन्थ लिखे गये है। डा आर के मुखर्जी ने अपनी पुस्तक "प्राचीन सभ्यता के इतिहास में भारत के प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों पर पर्यटन के महत्व को दर्शाया है। देवेन्द्र कुमार जैन ने अपने ग्रन्थ "खजुराहो ए स्टडी इन ट्यूरिस्ट ज्योग्राफी बिहेवियर पैटर्न एण्ड ज्योग्राफिकल एनालिसिस में पर्यटन के व्यवहारिक पक्ष की ओर ध्यान दिया है। खजुराहो में आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों की स्थिति रूचि, खजुराहो की वास्तुकला, वातावरण आदि का अध्ययन पुस्तक में किया गया है।

एस. के सैनी ने "जयपुर नगर के पर्यटन स्थलों का भौगोलिक विश्लेषण" में राजस्थान की भौगोलिक जानकारी प्रदान करते हुए जयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में यहाँ के धार्मिक, सास्कृतिक पर्यटन स्थलों का विवरण दिया है। एल के पवार ने डवलपिग रूरल ट्यूरिज्म फॉर सोशियल इकोनोमिक डवलपमेन्ट इन रूरल एरिया ऑफ राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के महत्व को दर्शाया है। राघवेन्द्र सिंह मनोहर कृत 'राजस्थान के प्रमुख दुर्ग में राजपूताना के प्रसिद्ध किले / दुर्गा का विस्तृत विवरण मिलता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपने बेजोड़ स्थापत्य के लिये जाने जाने वाले ये दुर्ग पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केद्र है।

राजेश व्यास ने अपनी पुस्तक पर्यटन उदभव एवं विकास एवं सांस्कृतिक राजस्थान में पर्यटन को देश के सबसे बड़े उद्योगों में से एक बताया है। पर्यटन का सो ठन, प्रबन्धन, आधारभूत सुविधाएँ आदि का विवरण पुस्तक में हुआ है। मोहनलाल गुप्ता के ग्रन्थ "जयपुर सम्भाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन में जयपुर, अलवर, दौसा, झुंझुन तथा सीकर के पर्यटन स्थलों पर प्रकाश डाला गया है।

विषय का चयन

राजस्थान की वीरभूमि विविध विशिष्टतायें लिये हुए है। योद्धाओं का अमिट पराक्रम, जन्मभूमि के लिये आत्मोत्सर्ग की प्रबल भावना, नारियों का शौर्य, त्याग व बलिदान, संस्कृति का वैविध्य सदैव लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ एक ओर विशाल थार का रेगिस्थान है तो दूसरी ओर अरावली की प्राचीन श्रंखलाएँ है। पश्चिम में रेत के विशाल टीले है तो दक्षिण वनों एवं हरितिमा के वैभव से युक्त है। प्रदा का यह भौगोलिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक परिदृश्य सदैव पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है।

यहाँ की फिजाओं में व्याप्त अनेक कथायें, स्थापत्य के बेजोड़ नमूने दुर्ग, महल,हवें लयाँ, मन्दिर, जलाशय आदि स्मारक पर्यटकों को लुभाने में सहायक है। उक्त सभी कारणों के फलस्वरूप प्रदेश में पर्यटन उद्योग प्रगति कर रहा है।

इस विषय पर अभी तक अनेक शोध कार्य हुए है। किन्तु पर्यटन के विकास के लिए जिस विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन की आवश्यकता है वह अभी तक नहीं हो पाया है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए शोधार्थी ने पर्यटन विषय का चुनाव किया है।

विषय का उद्देश्य:-

पर्यटन आज विश्व में अतिशीघ्रगामी विकसित उद्योगों में से एक हैं। वैश्वीकरण एवं भौतिकवाद के युग में यह एक महत्त्वपपू आर्थिक स्तम्भ है। भारतवर्ष में पत्र वर्षीय योजनाओं में इसे महती स्थान दिया गया है। आर्थिक सो टरों में सर्वाधिक वृद्धि दर तथा तुलनात्मक रूप से कम पर सर्वाधिक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोजगार का सृजन करने वाला उद्योग पर्यटन उद्योग है। अर्थव्यवस्था में इसकी महत्वपपू भूमिका को देखते हुए ही राजस्थान सरकार ने पर्यटन के विकास के लिए कई कारगर कदम उठाये है। पर्यटन को व्यवसायिक रूप प्रदान करते हुए इसे जन उद्योग का दर्जा दिया गया है।

पुर्यटन न केवल आर्थिक लाभ वरन सामाजिक-धार्मिक सद्भाव तथा सांस्कृतिक एकत्व प्रदान करने में भी महत्वष्ट्र भूमिका अदा कर सकता है। शोधार्थी ने "पर्यटन" की महत्ता के कारण ही उक्त विषय का चयन किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जयपुर जिले में पर्यटन के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन कर विभिन्न पर्यटक स्थलों को उनकी उपादेयतानुसार कू बंद करने का आग्रह होगा। वर्तमान पर्यटन उद्योग की विधाओं तथा समस्याओं की सूची का अन्देषण कर उसका समाधान करने का प्रयास शोधार्थी की प्राथमिकता में होगा। जिससे जिले के भाषी पर्यटन विकास हेतु उपर्युक्त योजनाओं का निर्धारण हो सके और यहाँ आने वाला प्रत्येक पर्यटक अपने भ्रमण/ यात्रा का आनन्द उठा सके।

उक्त विषय के चुनाव का प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित तथ्यों को स्थापित करना है-

- पर्यटन उद्योग को जन उद्योग का दर्जा दिया जा सकता है।
- पर्यटन के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन करना शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है।
- पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण एवं उन्हें सचीबद्ध करना प्राथमिकता में रहेगा।
- पुर्यटन उद्योग की समस्याओं का अन्वेषण करना शोधार्थी की प्राथमिकता है।
- उक्त समस्याओं के समाधान का प्रयास किये जायेंगे।
- जयपुर की पर्यटन व्यवस्था आधुनिक तकनीक व सुविधाओं पर केन्द्रित हो रही है।
- जिससे अध्ययन एवं आंकड़ों का सां हण सुचारू एवं सरल रूप से हो सकता है।
- समय, अर्थ एवं श्रम की सीमाओं के कारण जयपुर जिले का चुनाव किया जयपुर जिले
- आधुनिक शोधकार्य अभी तक नहीं हुआ है।
  जयपुर जिले का होने के कारण अध्ययन सामग्री की उपलब्धता,
- पर्यटन केन्द्रों के प्रत्यक्ष दर्शन, पर्यटन मन्त्रालय से आंकड़ों की उपलब्धता ने जयपुर जिले को अध्ययन केन्द्र बनाने की ओर प्रेरित किया।
- ऐतिहासिक व भौगोलिक दृष्टि से पर्यटन से सम्बन्धित

शोध तकनीक

प्रस्तुत शोध में जिले में पर्यटन को देखने के लिये शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एव द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का सा हण किया जायेगा। संग्रहित ऑकड़ों से गत प्रस्तुत शोध में जिले में पर्यटन को देखने के लिये शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का सां, हण किया जायेगा। संग्रहित ऑकड़ों से गत 5 5 वर्ष के अन्तर को फोटोग्राफिक विधियों के माध्यम से जयपुर पर्यटक स्थलों को अलग-अलग आभाओं द्वारा दिखाया जायेगा। पर्यटकों की कमी या अधिकता दिखाने के लिये जिले के मानचित्र पर वर्णमात्री व समान रेखाविधि द्वारा उन केन्द्रों को मानचित्र पर प्रदर्शित किया जायेगा। शोधार्थी द्वारा विभिन्न स्थानों से एकत्रित प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रकार के आंकड़ो का सपण सारणीयन एवं परिवर्तन करके विभिन्न गणितीय एवं सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर परिणाम निकाला जायेगा। तथा आंकड़ो, संख्याओं व सारणियों को तालिकाओं, मानचित्रों द्वारा प्रदर्शित करने साथ साथ समं को प्रभाव एवं रूचिकर बनाने के लिए चित्रमय प्रदर्शन किया जायगे । चित्रमय प्रदर्शन करने के लिये प्रतिशत अन्तर्विभक्त दण्ड चित्र, द्विविमा चित्र वृत्त चित्र विधि के प्रयोग द्वारा दर्शाया व विश्लेषित किया जायेगा।

आंकड़ों के संकलन का स्रोत

शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्तर के आँकड़े प्राप्त के लिए जयपुर में आने वाले 200 विदेशी एवं 400 स्वदेशी पर्यटको से निदर्शन विधि (Sampling Mathod) के अन्तर्गत साक्षात्कार एवं प्रश्नावली का प्रयोग कर व्यक्तिगत प्रेक्षण विधि एवं अनुसूची विधि को उपयोग में लेकर आँकड़ों का अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीयक प्रकार के आँकड़े प्राप्त करने के लिए सरकारी प्रकाशन जिसके अन्तर्गत केन्द्रीय एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभागों से प्रकाशित रिपोर्टस्, अर्द्धसरकारी के तहत जिले की नगर पालिकाओ, नगर निगम, जिला परिषद्, जयपुर विकास प्राधिकरण आदि विभागों से प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों का अध्ययन किया जायेगा। भू-सर्वेक्षण हेतु भारतीय सर्वेक्षण विभाग से जयपुर जिले का मानचित्र लेकर जयपुर जिले के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण, परिवहन मार्ग एवं विभिन्न पर्यटक

केन्द्रों के मानचित्र बनाये जायेंगे। निजी क्षेत्र के अन्तर्गत ट्यूर ऑपरेटर, ट्रेवल एजन्सी, होटल एवं रेस्तरा उद्योग, एम्पोरियम आदि द्वारा पर्यटन सम्बन्धी सच नाएँ एकत्रित की जायेगी। इसके अतिरिक्त पर्यटन, परिवहन, मनोरंजन विभाग के अधिकारियो, गाईडों आदि से साक्षात्कार करके पर्यटन सम्बन्धी सुविधाओं एवं समस्याओं का अध्ययन किया जायेगा

संदर्भ ग्रंथ सूची

गहलोत, जगदीश सिंह : कछवाहों का इतिहास, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर, 2004

गोस्वामी, प्रेमचन्द : राजस्थान संस्कृति कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2006

नीरज, जयसिंह एव शर्मा भगवती : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000

भटनागर, वीरेन्द्र स्वरूप : सवाई जयसिंह, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1998

मनोहर राघवेन्द्र सिंह : राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997

शर्मा, प्रकाश : रिसर्च मेथडॉलॉजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2004

सक्सेना, शालिनी : राजस्थान के लोक तीर्थ, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2001

व्यास राजेश कुमार : पर्यटन उदभव एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013

व्यास राजेश कुमार : सांस्कृतिक राजस्थान राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,